पीडब्ल्यूआर एक
पीआर नंबर 31332
फिल्मिंग एक बीजिंग

संपादक– यह विज्ञप्ति आपको एशियानेट के साथ संपन्न हुई व्यवस्था के तहत प्रेषित की जा रही है । पीटीआई पर इसका कोई संपादकीय उत्तरदायित्व नहीं है ।

लीविंग फीयर बिहाइंड

बीजिंग, 6 अगस्त, पीआरन्यूजवायर– एशियानेट ।

तिब्बतियों की सच्ची भावनाओं को समेटते हुए रहस्यमय तरीके से एक फिल्म का निर्माण किया गया
इसमें तिब्बती तिब्बत, चीन और ओलंपिक खेलों पर चर्चा करते हैं

मीडिया ब्रीफिंग और स्क्रीनिंग
6 अगस्त, 2008 12:00 दोपहर
बीजिंग

29वें ओलंपियाड के शहर में आज एक ऐसी अभूतपूर्व फिल्म की विश्व मीडिया के समक्ष स्क्रीनिंग पेश की जाएगी जिसे तिब्बत में गुप्त तरीके निर्मित किया गया है और मार्च महीने की शुरुआत के ठीक कुछ दिनों पहले ही तस्करी के जरिए मंगाया गया है । लीविंग फीयर बिहाइंड 25 मिनट की एक डाक्यूमेंटरी फिल्म है जिसे दुस्साहसी तिब्बती फिल्म निर्माताओं की टीम ने तैयार किया है और इसमें तिब्बत पर चीन के शासन, ओलंपिक खेलों की प्रासंगिकता और इसके शुभंकर तथा दलाई लामा की वापसी को लेकर वहां के लोगों की भावनाओं को व्यक्त किया गया है ।

पूर्वी तिब्बत के स्वयं प्रशिक्षित फिल्म निर्माताओं की टीम में धोनदप वांगचेन : एक किसान : और उनके मिां गोलोग जिग्मी : एक साधु : शामिल हैं ।

इस टीम ने तिब्बतियों से प्रतिदिन तीन विषयों पर चर्चा करते हुए उनके तकरीबन 35 घंटे तक इंटरव्यू लेने के बाद गुप्त तरीके से फिल्म बनाई । जिन विषयों पर इंटरव्यू किए गए वे हैं : तिब्बत में चीन का शासन, बीजिंग ओलंपिक खेल और दलाई लामा ।

महज 300 डालर की कीमत के एक वीडियो कैमरे के साथ और मूल रूप से किसी तरह के अनुभव से रहित, पूर्वी तिब्बत तथा तिब्बत की खाडी के दूरवर्ती इलाकों में मोटरसाइकिल से यांाा करते हुए फिल्म निर्माताओं ने फिल्म तैयार की । शुरुआती दौर में उनका लक्ष्य तिब्बतियों की आवाज बीजिंग खेलों के खिलाफ उठाए जाने को लेकर था । अपनी फिल्म के बारे में फिल्म निर्माता धोनदप वांगचेन ने कहा, ''तिब्बतियों के लिए बीजिंग जाना और वहां के बारे में कुछ भी कहना काफी मुश्किल होता है । यही वजह है कि हमने तिब्बत के दूरवर्ती इलाकों में जाकर तिब्बतियों की सच्ची भावना को इस फिल्म में दर्शाने का फैसला किया है ।''

इस फिल्म के लिए 100 से ज्यादा इंटरव्यू अक्तूबर 2007 से लेकर मार्च 2008 तक रिकार्ड किए गए । सभी

पृष्ठभूमियों के तिब्बतियों की हार्दिक भावनाओं को इस फिल्म के लिए रिकार्ड किया गया । ये लोग किसान, व्यापारी, छाा, घूमंतु और साधु समुदाय के अलावा युवा तथा बुजुर्ग थे ।

उनकी प्रतिक्रियाओं की विश्वसनीयता को सरल तरीके से व्यक्त किया गया है और उनके साथ हुए दमनकारी तथा भेदभावपूर्ण बर्ताव का उनके जीवन पर हुए प्रभाव को इस फिल्म के जरिए दिखाया गया है ।

इंटरव्यू देने वाले तिब्बतियों की टिप्पणी इस प्रकार थी :

''दरअसल, हम इस ओलंपिक खेलों को लेकर खुश होते लेकिन हमारे बारे में काफी गलत धारणाएं फैलाई गई हैं । चीन को इस खेल की मेजबानी का अधिकार इसी शर्त पर दिया गया है कि चीन और तिब्बत की स्थिति में सुधार लाया जाएगा ।''

''——— दूसरे देशों के लोग यही सोचते होंगे कि तिब्बतियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जा रहा है और वे काफी खुश हैं । लेकिन सच्चाई यह है कि तिब्बती अपने साथ हो रही ज्यादतियों के बारे में भी खुलकर बोलने के लिए स्वतों नहीं हैं ।''

''प्रत्येक तिब्बती के लिए दस से पंद्रह चीनी तैनात किए गए हैं । इस तिब्बती इलाकों में चीनी हर जगह फैले हुए हैं ।''

''अगर मुझे अपने संदेश कि 'मैं दलाई लामा को देखना चाहता हूं' को प्रसारित करने के लिए अपनी जान भी देनी पड जाए तो मैं तैयार हूं और इस अवसर का स्वागत करूंगा ।''

फिल्म में दिखाए जाने वाले उन सभी 20 लोगों ने फिल्म में अपने चेहरे दिखाने पर सहमति जताई है जो उनके लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत बडा जोखिम है ।

वांगचेन ने खुलासा किया है कि इंटरव्यू देने वाले कुछ तिब्बतियों ने यह भी कहा है कि ''हम निश्चित रूप से अपना चेहरा दिखाना चाहेंगे क्योंकि ऐसा नहीं करने पर अपनी भावनाएं व्यक्त करने का कोई मतलब नहीं रह जाएगा ।'' उन्होंने बताया कि तिब्बत को लेकर चीन की दुर्भावना के खिलाफ उनके मन में अपनी अभिव्यक्ति की इच्छाशक्ति काफी प्रबल थी ।

फिल्म निर्माण के दौरान धोनदप वांगचेन ने जिग्मी : तिब्बती में जिसका अर्थ होता है ''निर्भय'' : के कोड नाम के तहत काम किया । उनका कोड नाम और इस परियोजना से जुडे उन सभी लोगों की बहादुरी ने फिल्म का नाम जिग्द्रेल रखने के लिए उन्हें प्रेरित किया जिसका अनुवादित संस्करण लीविंग फीयर बिहाइंड है ।

10 मार्च 2008 को फिल्म से जुडे अपने टेप भेजने के ठीक बाद ही धोनदप वांगचेन और गोलोग जिग्मी को गिरफ्तार कर लिया गया । वे आज भी हिरासत में हैं । धोनदप वांगचेन को आखिरी बार हिरासत के दौरान झिनिंग : किंघाई : के गुआंगशेंग बिंगुआन में देखा गया था । गोलोग जिग्मी को आखिरी बार हिरासत अवधि के दौरान ही लिंगझिया : गांसू : के शहर स्थित जेल में देखा गया था ।

उनके टेपों को स्विटजरलैंड भेजा गया जहां वांगचेन के चचेरे भाई ग्ज़ालिजोंग टीसेट्रिन द्वारा इसे

अंतिम रूप से संपादित कर तैयार किया गया ।

तिब्बत से वर्ष 2002 में भागे झालिजोंग ने इस फिल्म का निर्माण करने के लिए फिल्मिंग फार तिब्बत की स्थापना की ।

अधिक जानकारी तथा इस फिल्म को आनलाइन देखने के लिए देखें डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डाट लीविंगफीयरबिहाइंड डाट काम । चीन में रहते हुए इस वेबसाइट को देखने के लिए सरकारी सेंसरशिप उपकरणों से इसमें काट–छांट के उपकरण होना जरूरी है ।अन्य सुझाए गए विकल्पों में वीपीएन : वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क :, वेबसाइट देखे जाने पर की जा रही निगरानी से बचने के लिए टार साफ्टवेयर या सिफान, एक खुले स्रोत की छद्दम वेब शामिल हैं ताकि तथ्यों की काट–छांट प्रणालियों से बचा जा सके ।

स्रोत : फिल्मिंग फार तिब्बत

संपादकों के ध्यानार्थ : ईमेल संबंधी पूछताछ के लिए : इन्फो एट लीविंगफीयरबिहाइंड डाट काम
वेबसाइट : एचटीटीपी : डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डाट लीविंगफीयरबिहाइंड डाट काम
पीआरन्यूजवायर– एशियानेट : रंजन